Q. अरस्तू के अनुसार नैतिक सद्गुण की विवेचना करें?

Ans → अरस्तू का नैतिक विचार सद्गुणों से ही प्रारम्भ होता है। अरस्तू मानते हैं की सद्गुणी व्यक्ति ही सुखी रहता है तथा सुखी व्यक्ति ही कल्याणमय सामाजिक जीवन व्यतीत करता है इस विपरीत दुर्गुणी होना दुःख का कारण है। अरस्तू सद्गुण को कल्याणमय जीवन बतलाते हैं।

अरस्तू के अनुसार मानव आत्मा के दो अंश हैं — विवेकप्रधान और भावना प्रधान। विवेकपूर्ण आत्मा के लिए बौद्धिक या दार्शनिक सद्गुण है जिसका भावनाओं से कोई संबंध है। परन्तु भावना प्रधान आत्मा का संबंध वासना, संवेग, बुभुक्षा आदि से है। भावना प्रधान आत्मा के दो वर्ग हैं — चेतन और अचेतन। चेतन ज्ञान या विवेक है इसके कारण मानव विवेकशील कहलाता है। दूसरा स्तर अचेतन का संबंध भावना से है। इसमें भी विवेक है परन्तु भावना संबद्ध विवेक है। इसमें पहला उच्चवर्ग का है तो दूसरा निम्नवर्ग है। साधारण मनुष्य इन दोनों का समन्वय है। अतः मानव को विवेकशील पुरुष कहा जाता है। नैतिक सद्गुण विवेक और भावना का समन्वय है। मानव में राग-द्वेष; काम-क्रोध, इच्छा-वासना आदि अवश्य है ये सभी अचेतन आत्मा के अंश हैं जिनको खत्म करना संभव नहीं है। लेकिन इनका नियंत्रण अवश्य हो सकता है। हम विवेक या विचार करके नियंत्रण कर सकते हैं अतः नैतिक दृष्टि से सद्गुणी व्यक्ति वह है जो वासनाओं का विवेक से नियंत्रण कर सकता जीवन यापन करता है। उदाहरण के लिए संयम और साहस नैतिक सद्गुण है। संयमी व्यक्ति न तो अपनी कामनाओं को पूर्णतः नहीं त्यागता है और न ही सभी कामनाओं का दास बनकर जीवन यापन करता है बल्कि वह विवेक द्वारा अपनी कामनाओं और इच्छाओं पर नियंत्रण रखता है। साहस कायरता और उद्दण्डता का मध्य बिन्दु है। वह व्यक्ति साहसी नहीं है जो कि युद्ध में अपना शौर्य प्रदर्शित करे और न ही वह जो की भय के कारण युद्ध स्थल से भाग जाये। बल्कि साहसी वह है जो

Scanned by CamScanner

विपरीत परिस्थितियों परिस्थिति उत्पन्न होने पर भी विचलित न होना तथा धैर्य पूर्वक परिस्थिति का सामना करना ही साहस नामक सद्गुण है।

नैतिक सद्गुण की विशेषता

(1) नैतिक सद्गुण अभ्यास जन्य होते हैं जो जन्म जात नहीं होते हैं। परन्तु हम अभ्यास के द्वारा नैतिक सद्गुण को विकसित करते हैं। साहस-संयम आदि सद्गुण को अपनाने के लिए ही अभ्यास करना पड़ता है।

(2) नैतिक सद्गुण बौद्धिक सद्गुण से स्वभावतः भिन्न होते हैं। नैतिक सद्गुण का संबंध अभ्यास से होते है जो बौद्धिक सद्गुण का संबंध शिक्षा से है। अर्थात् बौद्धिक सद्गुणों शिक्षा के द्वारा विकसित किया जाता है। परन्तु नैतिक सद्गुण के लिए अभ्यास की आवश्यकता है। साहस-संयम-नैतिक सद्गुण का [illegible] विवेक से है।

(3) नैतिक सद्गुण ऐच्छिक कर्म के परिणाम हैं। नैतिक सद्गुण का अभ्यास हमारी इच्छा पर निर्भर है। नैतिक सद्गुण का हम अपनी स्वतंत्र इच्छा से अभ्यास करते हैं अतः यह हमारा आचरण कहलाता है। परन्तु बौद्धिक सद्गुण हमारे आचरण का विषय नहीं है बल्कि यह शिक्षा का विषय है।

(4) नैतिक सद्गुण से मानव का लक्ष्य का उद्देश्य से पता चलता है। हमारे कर्म का लक्ष्य शुभ की प्राप्ति है और यह शुभ ही सुख है। अरस्तु के अनुसार सुख साध्य है साधन नहीं। नैतिक सद्गुण इसी साध्य की ओर संकेत करता है।

मानव को नैतिक दृष्टि से सद्गुणी होने के लिए अतिवादिक दृष्टिकोणों का त्याग करना चाहिए तथा दोनों अन्तों के मध्यम बिन्दु

Scanned by CamScanner

को अपनाना चाहिए। यह मध्य किन्तु अतिवादी अन्तों का समन्वय है। यह समन्वय संतुलित जीवन है और संतुलित जीवन ही सुखी जीवन है। अतः जीवन में सच्चा सुख प्राप्त करने के लिए संतुलन और समन्वय की आवश्यकता है। अन्तों में आस्था मानव को उग्रवादी बनाता है। अन्तों का समन्वय सुखी बनाता है। अतः मध्य मार्ग अन्तवादी दृष्टिकोणों का बीच का मार्ग है। जैसे — साहस, कायरता और उद्दण्डता का मध्य है ~~किसी नीति~~ इस प्रकार किसी नैतिक सद्गुण का निश्चय मध्य मार्ग से ही हो सकता है। इसके लिए सतत प्रयास की आवश्यकता है।

निष्कर्ष —— निष्कर्षतः कह सकते हैं कि नैतिक सद्गुण को अपनाने के बाद व्यक्ति सुखी हो सकता है और सुखी व्यक्ति कल्याणमय जीवन व्यतीत कर सकता है। परन्तु नैतिक सद्गुण के सम्बन्ध में जो मध्यम मार्ग बतलाते हैं। यह व्यावहारिक जीवन के लिए बड़ा उपयोगी मार्ग है।

Scanned by CamScanner